आज़ादी का अमृत महोत्सव

मध्य रेल

G20 भारत 2023 INDIA

रेल सुरभि

मुख्यालय राजभाषा विभाग की त्रैमासिक गृह पत्रिका

मध्य रेल का गौरव - वंदे भारत

रेल सुरभि

अंक 32

(अक्तूबर-दिसंबर, 2022)

-: संरक्षक :-

नरेश लालवानी
महाप्रबंधक

:- मार्गदर्शक :-

अरुण कुमार श्रीवास्तव
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर
तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी

:- प्रधान संपादक :-

विपिन पवार
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

:- संपादक :-

दीपा मंद्यान
राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

:-सहयोग:-

गिरीश चितले, वरिष्ठ अनुवादक
राकेश पांडे, कनिष्ठ अनुवादक

संपर्क का पता

महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग
नया प्रशासनिक भवन, मध्य रेल, मुंबई छशिमट
फोन : 54753/54752/54754 (रेलवे)
022-22697123 (एमटीएनएल)
ई-मेल : dgmol12@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित सभी विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। उन्हें भारत सरकार या रेल मंत्रालय के विचार न समझा जाए । रचनाकार अपनी रचना की मौलिकता के लिए स्वयं जिम्मेदार है ।

अनुक्रमणिका

क्र.	रचना का नाम	विधा	रचनाकार (सर्वश्री/श्रीमती)	पृष्ठ सं.
1	आभाएं कभी बुझा नहीं करती	लेख	विपिन पवार	5-7
2	अतिरिक्त दौड़	कविता	दीपा मंद्यान	8
3	सच्चे लोग- अच्छे लोग	लेख	किशोर कुदरे	9-10
4	क्षेत्रीय भाषा का महत्व	लेख	विकास कुमार बघेल	11-15
5	शगुन की मेहंदी	लेख	सौ. ममता राजेश टेंपे	16-17
6	मेरी परी	कविता	राशी गुप्ता	18
7	मेरी मां	कविता	प्रियंका संदीप तिवारी	19
8	आयी शरद ऋतु आई, ठण्डक की आहट लाई	कविता	संतोष कुमार शर्मा	20
9	छोड़ आए हम वो गलियां	कविता	आनंद कुमार केवट	21-22
10	शौर्य तथा आध्यात्म का कीर्तिशिखर : सज्जनगढ़	लेख	विपिन पवार	23-25

महाप्रबंधक का संदेश

मध्य रेल पर कार्यभार संभालने के पश्चात् मुझे यह जानकारी प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि मुख्यालय राजभाषा विभाग तथा मंडलों, कारखानों में हिंदी की पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन किया जाता है। निश्चित रूप से हिंदी के प्रयोग-प्रसार की दिशा में यह एक सकारात्मक प्रयास है। इससे अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग के प्रति रुचि तो उत्पन्न होती ही है साथ ही उन्हें अपनी अभिव्यक्ति का एक मंच भी मिलता है। अगर अधिकारी और कर्मचारी हिंदी में सोचने लगेंगे तो निश्चित रूप से उन्हें हिंदी में काम करने की प्रेरणा भी मिलेगी।

इस पत्रिका में विभिन्न लेखों आदि को पढ़ने से निश्चित रूप से आशा जगती है कि हम वाकई में मध्य रेल को राजभाषा युक्त बना सकते हैं। 'ख' क्षेत्र में होने के बावजूद मध्य रेल में हो रहे हिंदी कार्य को देखते हुए हम निश्चित रूप से मध्य रेल को सभी रेलों में अग्रणी बनाने में कामयाब होंगे।

मध्य रेल पर कार्यभार संभालने के पश्चात् मैंने देखा है कि जनसंपर्क से जुड़ी सभी मदों में हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है। हमारे सभी अधिकारी और कर्मचारी भी हिंदी के प्रयोग में अत्यधिक रुचि लेते हैं। हाल ही में हुए संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान भी समिति के सभी सदस्यों द्वारा मध्य रेल की प्रशंसा की गई है। अब हमारा यह दायित्व है कि हम अपनी इस उपलब्धि को बरकरार रखें। हमारे कई अधिकारियों तथा कर्मचारियों को रेलवे बोर्ड स्तर के पुरस्कार मिल चुके हैं। मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील करता हूं कि आप सब जागरुक होकर हिंदी में काम करें तथा हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में मध्य रेल को गौरवान्वित करने में अपना योगदान दें।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूं।

(नरेश लालवानी)

महाप्रबंधक

संदेश

राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए प्रकाशित की जाने वाली पत्रिकाओं की परंपरा में मुख्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की गई इस पत्रिका का नवीनतम अंक ई-प्रारूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका का ई-प्रारूप में प्रकाशन रेलवे बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुसार फिलहाल किया जा रहा है। मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूं कि हम शीघ्र ही इस पत्रिका का मुद्रित अंक आपके हाथों में सौंपेंगे।

इस पत्रिका के लिए विभिन्न रचनाकारों ने हमेशा अपना बहुमूल्य सहयोग दिया है जिसके चलते हमें इस पत्रिका के स्तरीय प्रकाशन में हमेशा ही सहयोग मिला है। हमारा उद्देश्य मध्य रेल को राजभाषा युक्त बनाना है और मुद्रित साहित्य ही हमारे इस मिशन को कामयाब बनाने में अवश्य सहायक सिद्ध होगा।

हम मध्य रेल पर राजभाषा के प्रयोग प्रसार के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। हमने राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए एवं अधिकारियों तथा कर्मचारियों को पूरे वर्ष के दौरान हिंदी से जोड़े रखने के लिए एक वार्षिक कैलेंडर भी बनाया है। मुझे विश्वास है कि हमारे इन प्रयासों का निश्चित रूप से अच्छे परिणाम सामने आएंगे।

हमारे महाप्रबंधक जी भी हिंदी के काम में काफी रुचि रखते हैं। उनके सहयोग से चाहे मुख्यालय हो या मंडल या कारखाना स्तर पर हम निश्चित रूप से हिंदी को पूरी तरह से स्थापित करने में सफल होंगे।

हमारी पत्रिका की इस सफल परंपरा को बनाए रखने के लिए मैं आप सभी से अपील करता हूं कि विचारों की अभिव्यक्ति का आप पूरी तरह से लाभ उठाएं और अधिक से अधिक रचनाएं भेजें।

संसदीय राजभाषा समिति ने भी हाल ही में हुए निरीक्षण के दौरान हमारी पत्रिका की सराहना की है। इसके अलावा मुंबई की सुप्रसिद्ध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था ''आशीर्वाद'' द्वारा भी इसे पुरस्कृत किया जा चुका है। अत: मैं चाहता हूं कि अपनी स्तरीयता को बरकरार रखने के लिए हमें हर स्तर पर प्रयास करना होगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लिए मैं सभी रचनाकारों को बधाई देता हूं और उनके भविष्य में भी सहयोग की अपेक्षा करता हूं।

मंडलों तथा कारखानों आदि के सभी रचनाकारों से भी मैं अपेक्षा करता हूं कि वे बढ़-चढ़कर रचनाएं स्वयं प्रेरित होकर इस पत्रिका के लिए भिजवाएं ताकि हमें पत्रिका के सफल प्रकाशन में निरंतर सहयोग मिलता रहे।

आगामी अंक संभवत: मुद्रित रूप में प्रकाशित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी। इसी आशा के साथ आप सभी को हार्दिक बधाई।

ए.के. श्रीवास्तव

(ए.के. श्रीवास्तव)
मुख्य राजभाषा अधिकारी तथा
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर

संपादकीय

रेल सुरभि का यह अंक आकर्षक एवं रोचक सामग्री के साथ प्रकाशित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आप सभी के सहयोग से इस अंक का प्रकाशन संभव हुआ है। अपनी स्तरीय प्रकाशन की परंपरा को कायम रखते हुए मुख्यालय राजभाषा विभाग द्वारा हमेशा ही एक से बढ़कर एक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता रहा है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका को भी सभी पाठकों द्वारा निश्चित रूप से सराहा जाएगा।

हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 17.01.2023 को महाप्रबंधक कार्यालय का निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण के दौरान प्रस्तुत की गई मुख्यालय की पत्रिकाओं की समिति के सभी सदस्यों द्वारा सराहना की गई है इसलिए अब हमारा दायित्व और बढ़ गया है कि हम अच्छे-अच्छे लेखों, कहानियों, कविताओं के साथ पत्रिका का प्रकाशन करें। इसमें आप सभी के सहयोग की अपेक्षा है। मेरी आप सभी से अपील है कि आप अपने विचार इस पत्रिका के माध्यम से व्यक्त करें। इससे हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ आप सभी में हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न करने में भी सहायता मिलेगी ।

मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हमारे नए महाप्रबंधक भी हिंदी के कार्य में काफी रुचि लेते हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन का प्रस्ताव प्रस्तुत करने पर उन्होंने अपना संदेश इस पत्रिका के लिए तुरंत भिजवाया। मैं महाप्रबंधक जी के द्वारा दिए गए सुझावों के लिए उनका अत्यंत आभारी हूं।

पुन: एक बार सभी से इस पत्रिका की सफलता हेतु अपनी रचनाएं भिजवाने के अनुरोध के साथ आप सभी को धन्यवाद देता हूं।

आभाएं कभी बुझा नहीं करती

विपिन पवार

संत विनोबा भावे जी ने लिखा है कि स्मृति बहुत ही सूक्ष्म मानसिक शक्ति है। मनुष्य द्वारा जो कर्म किए जाते हैं वे तो पूर्णता को प्राप्त होने पर समाप्त हो जाते हैं, लेकिन उन कर्मों के दौरान घटी अच्छी-बुरी घटना का सुखमय या दुखमय संसार सदा के लिए चित्त पर अंकित हो जाता है और परिस्थितियों के आने पर वह उभरकर मानव-पटल पर हिलोरे लेने लगता है। शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के कर्म होने के कारण संस्कार भी दोनों प्रकार के होते हैं। उन संस्कारों का रिकार्ड मन में सुरक्षित होता है, इन्हीं सुरक्षित संस्कारों के संग्रह को स्मृति कहते हैं। उनमें से कुछ विशेष स्मृतियां ही दीर्घकालीन होती हैं, क्योंकि सबकी सब स्मृतियों का बोझ चित्त नहीं उठाता। इसलिए चित्त उनमें से सामान्य-सी या अनावश्यक स्मृतियों को फेंक देता है और जो कुछ रहता है उसको स्मृति-शेष कहेंगे। अच्छी स्मृति का अच्छा और बुरी स्मृति का बुरा असर चित्त पर होता है। अच्छे और बुरे चित्त स्मृति-शेष को अलग-अलग करके संचित करने का काम विवेक करता है। अरुणाभा की स्मृति पहले प्रकार की स्मृति में आती है। काफी लंबी अवधि तक अरुणाभा ठाकुर, जिन्हें हम आभा कहते थे, के निकट संपर्क में रहने के कारण जब रेल सुरभि का अंक प्रेस में जा रहा था तो मैं अपनी लेखनी को रोक नहीं पाया।

अरुणाभा मूलत: बिहार की रहने वाली थी। पिताजी रेल सेवा में होने के कारण उत्तर रेलवे में अनेक स्थानों पर बचपन बीता। उनके पिताजी डीजल रेल इंजन कारखाना, वाराणसी में सहायक कार्मिक अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए। बनारस में रहते प्रात: गंगा में तैरकर उन्होंने अपने शरीर को बहुत मजबूत बना लिया था। मैं जब 1990 में उनसे पहली बार मिला तो एक मजबूत कदकाठी की राजभाषा सहायक ग्रेड- ।। से मिलकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हुआ, लेकिन अब लगता है कि जीवन कितना क्षणभंगुर है और हमारा शरीर मिट्टी से बना है एवं मिट्टी में मिल जाएगा। भले ही कितना भी मजबूत क्यों न हो। जीवन का यह शाश्वत सत्य हमें दिखाता है कि किस तरह चलता-फिरता शक्तिशाली शरीर पंचतत्व में विलीन हो जाता है।

अरुणाभा का विवाह जब नौसेना में कार्यरत श्री सदन ठाकुर से हुआ तो वे अपने पति के पास मुंबई आ गईं और दक्षिण मुंबई के नेवी नगर में रहने लगी। अरुणाभा कठोर परिश्रमी, निष्ठावान, ईमानदार और समय की पाबंद कर्मचारी थी। मध्य रेल मुख्यालय के परिचालन विभाग में अपने सेवाकाल के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच उन्होंने अपनी बहुत अच्छी छवि बनाई और मध्य रेल पर परिचालन विभाग की नियम पुस्तिकाओं, संहिताओं, समय-सारणियों को हिंदी में अनुदित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका जीवन संघर्षों से भरा था। संघर्षों की आंच में तपकर वे खरा सोना बन गई थी। जब उनके पति स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर खाड़ी देशों में नौकरी हेतु चले गए तो उन्होंने अपनी दोनों बेटियों का दाखिला भारतीय रेल के प्रतिष्ठित ऑक ग्रोव पब्लिक स्कूल, झारीपानी, मसूरी में करवा दिया, इसका उद्देश्य बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलाने से बढ़कर सरकारी कार्य से निष्ठा करता था। उन्होंने मुझसे कहा था कि मुंबई में दो बच्चों की जिम्मेदारी अकेले निभाने पर मैं सरकारी कामकाज उस ढंग से नहीं कर पाऊंगी जिस ढंग से करती आ रही हूं। वर्ष में कई

बार बच्चों को मुंबई से मूसरी लाने ले जाने के कष्टप्रद कार्य को वे अकेले ही बड़े मजे से करती रही और इन यात्राओं के अनेक संस्मरण उन्होंने मुझसे शेयर किए थे। मुंबई के उपनगर कल्याण में फ्लैट खरीदा उस समय का मनोरंजन वाकया याद आता है। हमारे मुख्यालय के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी- । स्वर्गीय श्री कालिका प्रसाद मिश्र, गृह प्रवेश के अवसर पर कल्याण पहुंचे, तो अरुणाभा के दरवाजे पर लिखा था '' आभा सदन''। मिश्रा जी कहने लगे, देखो! आभा का वर्चस्व कार्यालय में तो है ही घर पर भी है। देखो! दरवाजे पर केवल अरुणाभा का नाम लिखा है पति का तो नाम ही नहीं लिखा है। बाद में अरुणाभा ने उन्हें समझाया कि मेरे पति का नाम सदन है। इसलिए घर का नाम रखा है आभासदन।

वर्ष 2003 में वे राजभाषा सहायक ग्रेड- 1 से पदोन्नत होकर राजभाषा अधीक्षक के रूप में भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान (इरिसेन) पुणे चली गई। वे मिलनसार, दूसरों का दुख समझने वाली, गरीबों के आंसू पोंछने वाली, ममतामयी, विशाल हृदय की स्वामिनी थी। उन्होंने हमारे विभाग के एक लड़के एवं एक अन्य लड़की को गोद लिया और आजीवन माँ का कर्तव्य निभाती रही। उन्हें मुखाग्नि उस दत्तक लड़की के बेटों ने ही दी। उनकी लोकप्रियता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि इरिसेन के सभी कर्मचारी उन्हें ''हिंदी माँ'' कहते थे। राजभाषा विभाग के अपने दायित्वों के अलवा उन्होंने बहुत से अन्य काम भी किए। किसी भी काम के लिए उन्होंने कभी मना नहीं किया। चाहे वह किसी के विदाई समारोह की तैयारी हो, राष्ट्रीय त्यौहारों के आयोजन में सहायता करना हो, पत्रिका का प्रकाशन करना हो या किसी का जन्मदिन मनाना हो। मेरा जन्म दिन वह बहुत उत्साह से मनाया करती थी।

संवेदनशील, मृदुभाषी एवं मिलनसार होने के साथ वे बेहद अनुशासन प्रिय, अपने सिद्धांतों एवं आदर्शों पर अडिग रहने वाली एवं अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली महिला थी। पुणे में रेल परिसर में निवास करते समय उन्हें जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा उसके समाधान के लिए वे लगातार प्रयास करती रहीं। पुणे मंडल के एक अधिकारी अरुणाभा को ' झांसी की रानी' कहा करते थे।

वे जीवन भर स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहीं, न केवल अपने बल्कि अपने साथी कर्मचारियों के भी। विभाग के तंबाकू, पान-मसाला एवं गुटका खाने वाले कर्मचारी उनके सामने अपने ''चैतन्य पूर्ण'' का सेवन नहीं करते थे। वे पुरुष कर्मचारियों की जेब से तंबाकू की पुड़िया निकाल लिया करती थी। कहती थी मत खाओ कैंसर हो जाएगा।

अरुणाभा अत्यंत धार्मिक किस्म की महिला थी। भगवान कृष्ण के बालरूप की अनन्य आराधिका एवं परम उपासिका। ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपने '' लड्डू गोपाल'' की सेवा-टहल कर, योग एवं प्राणायाम किया करती थी। आयुर्वेद पर उनका जबरदस्त विश्वास था और वे उसका प्रयोग भी करती थी। उनके अति वृद्ध कृषकाय माता-पिता उनके साथ ही रहते थे, क्योंकि वे जिम्मेदारियों से पलायन करने वाली नहीं अपितु जिम्मेदारियों को आमंत्रित करने वाली महिला थी। पिता की मृत्यु के पश्चात वे टूट-सी गई। कहती थी लगता है कि जैसे मेरे सिर से आसमान हट गया। जब मैं ऊपर देखती हूं तो मुझे सिर्फ शून्य दिखाई देता है।

इधर हाल के वर्षों में उनको पता नहीं कैसे मधुमेह ने घेर लिया। शायद यह इस विषाल वृक्ष में लगा पहला दीमक था। मुझे लगता है बाद के दिनों में वे अपने स्वास्थ्य के प्रति कुछ लापरवाह हो गई थी, फिर एक दिन पता चला कि उन्हें कैंसर हो गया है। जब मैं उनसे मिलने पहुंचा तो मुझे उसी प्रसन्नचित आभा के दर्शन हुए जैसा कि मैं उन्हें देखता आया था। कहने लगी कि मैं कैंसर को हराकर रहूंगी। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि इस युद्ध में हम सब आपके साथ हैं।

दो वर्ष लंबा संघर्ष, वटवृक्ष का सूखते-सूखते तुलसी के पौधे में परिणित हो जाना... सचमुच मेरे लिए यह कष्टप्रद रहा। आखिरी बार जब मैं उनसे मिला तो वह बहुत मुश्किल से बोल पा रही थी। उन्होंने एक हफ्ते से कुछ भी नहीं खाया था और न ही कुछ पिया था, उनके अंतिम शब्द आज भी याद है..... अगली बार..... नहीं शायद वे कहना चाह रही थी कि अगली बार जब आप पुणे आएंगे तो मैं आपको नहीं मिलूंगी। यह वह घड़ी थी, जब वह शरीर से नहीं, लेकिन मन से भी परास्त हो चुकी थी।

संसार में ऐसे लोग विरले ही होते हैं, जो अच्छे-बुरे सब लोगों से अपना संबंध बनाए रखते हैं। अरुणाभा भी उनमें से एक थी। उनके उस संबंध की ऊष्मा एवं आभा आज भी हमारे दिलों में प्रकाशित है। इसलिए मैं कहूंगा कि... आभाएं कभी बुझा नहीं करती।

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

राजभाषा युक्त मध्य रेल

विजन एवं मिशन 2021

अतिरिक्त दौड़

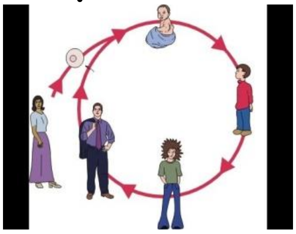

तीन पहर तो बीत गये,
बस एक पहर ही बाकी है।
जीवन हाथों से फिसल गया,
बस खाली मुट्ठी बाकी है।

सब कुछ पाया इस जीवन में,
फिर भी इच्छाएं बाकी हैं
दुनिया से हमने क्या पाया,
यह लेखा - जोखा बहुत हुआ,
इस जग ने हमसे क्या पाया,
बस ये गणनाएं बाकी हैं।

इस भाग-दौड़ की दुनिया में
हमको इक पल का होश नहीं,
वैसे तो जीवन सुखमय है,
पर फिर भी क्यों संतोष नहीं !

क्या यूं ही जीवन बीतेगा,
क्या यूं ही सांसें बंद होंगी ?
औरों की पीड़ा देख, समझ, कब अपनी आंखें नम होंगी ?

मन के अंतर में कहीं छिपे
इस प्रश्न का उत्तर बाकी है।

मेरी खुशियां, मेरे सपने
मेरे बच्चे, मेरे अपने
यह करते - करते शाम हुई
इससे पहले तम छा जाए
इससे पहले कि शाम ढले

कुछ दूर परायी बस्ती में
इक दीप जलाना बाकी है।
तीन पहर तो बीत गये,
बस एक पहर ही बाकी है।
जीवन हाथों से फिसल गया,
बस खाली मुट्ठी बाकी है।

जीवन की सारी दौड़ केवल अतिरिक्त के लिए है!

अतिरिक्त दौड़ - अतिरिक्त पैसा, अतिरिक्त दौड़ - अतिरिक्त पहचान,

अतिरिक्त दौड़ - अतिरिक्त शोहरत , अतिरिक्त दौड़, अतिरिक्त दौड़- सारी दौड़ खाली मुट्ठी

दीपा मंध्यान
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, मुंबई मंडल
एवं राजभाषा अधिकारी मुख्यालय का अतिरिक्त प्रभार
मध्य रेल, मुंबई छशिमट

"सच्चे लोग" - "अच्छे लोग"

किशोर कुदरे
वरिष्ठ अनुवादक

कहते हैं कि दुनिया में दो तरह के लोग पाए जाते हैं। एक होते हैं , सच्चे लोग और दूसरे झूठे लोग।

कई वर्षों पहले शायद ऐसा था। पहले या तो लोग सच बोलते थे या झूठ। लोगों की ये दो ही श्रेणियां थी। जो सच बोलते थे वो शराफत से शरीफों में शामिल होते थे और जो झूठ बोलते थे वे सभी लोफ़रों में हिक़ारत से शामिल होते थे। शायद इसीलिए ही यह मुहावरा भी बना होगा कि,"सच्चे का बोलबाला और झूठे का मुंह काला"। सच के आगे झूठ कांपने लगता था। सच अभिमान से और झूठ अपमान से ओत-प्रोत रहते थे। सच की जय जयकार होती और झूठ को दुत्कार मिलती।

इतने सालों से सच का ये प्रभाव झूठों से देखा नहीं जा रहा था और इस पर अत्याधिक दुःख इस बात का था कि सच कि तुलना में झूठ की आबादी बड़ी होने के बावजूद उन्हें सच के आगे देर से ही सही किन्तु घुटने टेकने पड़ते थे। समय बदलता गया और झूठ में सच के प्रति बदले की भावना जागृत हुई। सारे झूठ एकत्रित हुए और सच के कारण वर्षों से ज़िल्लत झेल रहे झूठों ने अपना संगठन बनाया। चूंकि संगठन झूठ का था , इसलिए झूठों की विभिन्न प्रजातियां जैसे लालची, आलसी, मुफ्तखोर, चापलूस, कामचोर, गद्दार, बेईमान आदि तत्काल इसमें शामिल हुईं। ये सब सच से बेहद पीड़ित थे और सभी चाहते थे कि, सच को किसी तरह परास्त कर खुद को सम्मानजनक स्थिति में लाया जाए।

सच को परास्त करने के संबंध में उक्त प्रजातियों ने अपने-अपने कई कुविचार रखे,किन्तु सच को परास्त करने का कोई हल नहीं निकल सका। फिर आम सहमति से झूठों ने मान लिया जो सही भी था, कि सच को कभी परास्त नहीं किया जा सकता। इसलिए इन्होंने दूसरा तरीका अपनाया। थोड़ा और गहन विचार करने पर उनकी समझ में आया कि सारी समस्या की जड़ इस "झूठ" नाम में है। झूठों का शातिर दिमाग सोचने लगा कि क्यों न हम इस नाम को ही बदल दें। किसी ने कहा है कि "नाम में क्या है"। किन्तु इनकी सारी समस्या इसी नाम के कारण ही थी। इन्होने सोचा कि इस "झूठ" नाम को बदलकर ऐसा नाम रखा जाए जो सच से मेल खाता हो ताकि इस नाम की आड़ में बिना सच की नफरत झेले अपनी बिरादारी के सारे गंदे काम आसानी से किए जा सके। बस फिर क्या था सर्व सहमति से सच से मेल खाता हुआ नामकरण किया गया। नाम रखा "अच्छे लोग"।

यह बात "सच्चे लोगों" तक पहुंची कि हम "सच्चे लोगों" की ही तरह ये "अच्छे लोग" है । उनको भी सुनने में अच्छा लगा कि उनके जैसे ही ये लोग होंगे। किन्तु सच्चे लोग यह नहीं जान पाए कि इन झूठों का केवल नाम बदला है, काम नहीं। और इस तरह आज के समाज में "सच्चे लोग" और "झूठे लोग" के स्थान पर "सच्चे लोग" और "अच्छे लोग" रहने लगे।

ये तथाकथित "अच्छे लोग", "सच्चे लोगों" के कंधे से कंधा मिलाकर चलते, उठते, बैठते हैं। किन्तु सच्चे को इसकी भनक तक नहीं लगी कि "अच्छाई" के नकाब में ये वही झूठे लोग हैं।

ये "अच्छे लोग" अपने दुश्मन से भी दोस्ती की अच्छी-अच्छी बातें करके अपना सम्मान करवा लेते हैं। इन

"अच्छे लोगों" को जिससे भी अपना काम निकलवाना हो, अपनी स्वार्थपूर्ति करनी हो, उसके सामने, उसके हित का सब अच्छा-अच्छा बोलते रहते हैं। वो इतना "अच्छा" बोलते हैं कि, सब कुछ जैसे सच्चा लगने लगता है। और हर कोई इन अच्छी बातों में फंस जाता है। ऐसे अच्छे लोगों के अनगिनत बनावटी किस्से हर एक की जिंदगी से गुज़रते हैं। आज जिसको देखो वो ही "अच्छा" बनकर अपना उल्लू सीधा कर रहा है।

यह झूठे उर्फ "अच्छे लोगों" की बिरादरी के लोग अपने लालच को पूरा करने के लिए निस्वार्थपन का, आलसी लोग अपने सक्रियता का, मुफ्तखोर अपनी खुद्दारी का, चापलूस अपने कर्तव्य परायणता का, कामचोर अपने परिश्रम का, गद्दार अपनी वफादारी का, बेईमान अपनी ईमानदारी का ऐसा ढोंग रचाते हैं कि सच्चाई भी इसमें दब के दम तोड़ जाए।

हालात तो यह है कि इसलिए ही अब चाहकर भी कोई सच्चा बोलना नहीं चाहता। सच कड़वा होता है, और सच्चा बोलने से काम बिगड़ते हैं,परेशानी बढ़ती है। लोग जुड़ने की बजाए टूटने लगते है। आदमी अकेला पड़ जाता है। किन्तु मन में चाहे जो रखो, पर मुंह से अच्छा बोलो तो लोग इस अच्छेपन की बातों में सच्चाई को नजरअंदाज़ कर देते है। लोगों का उल्लू सीधा और स्वार्थ सिद्ध होता जाता है। जब तक पता चलता है कि अच्छेपन की आड़ में सच्चाई का गला घोटा गया, तब तक देर हो चुकी होती है और "अच्छाई" के नाम से पीड़ित आदमी कुछ नहीं कर पाता। उसके सामने दो ही रास्ते रह जाते हैं। एक तो यह कि वो भी इसी अच्छाई के झूठे नकाब में जीकर औरों को पीड़ित करें या फिर किसी भी सूरत में सच्चाई का दामन न छोड़े।

कुछ लोग ऐसी अच्छाई के साथ हो लेते है और चंद सच्चाई से ही जुड़े रहते है। और इन चंद सच्चाई से जुड़े लोगो के कारण ही सच्चाई आज भी ज़िदा है और इसके आगे "झूठ" के शहद में लिपटी अच्छाई शर्मिंदा है।

महाप्रबंधक कार्यालय मध्य रेल,
मुंबई छ.शि.म.ट.

राजभाषा विभाग के प्रयासों से अब ई-ऑफिस में हस्ताक्षर करने वाले का नाम एवं पदनाम हिंदी में प्रदर्शित हो रहे हैं ।

Note No. #2

Digitally Signed

03/02/2023 2:58 PM

विपिन पवार|**VIPIN PAWAR**
(उप महाप्रबंधक (राजभाषा)/राज/मुख्यालय/मध्य रेल|**DGM(OL)/RAJ/HQ/CR)**

Note No. #3

महाप्रबंधक महोदय कृपया 13 फरवरी से 17 फरवरी के बीच में से कोई एक दिन समय 15 बजे से, क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के लिए निर्धारित करें।

Digitally Signed

04/02/2023 8:02 PM

ए के श्रीवास्तव|**A.K. SHRIVASTAV**
(प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर / एसएनटी / मुख्यालय / मध्य रेल|**PCSTE/SNT/HQ/CR)**

Note No. #4

06/02/2023 5:01 PM

साकेत कुमार मिश्रा|**SAKET KUMAR MISHRA**
(एसईसीवाय/मुख्यालय/मध्य रेल|**SECY/HQ/CR)**

Note No. #5

14.02.23 at 15:00

Digitally Signed

06/02/2023 5:13 PM

नरेश लालवानी|**NARESH LALWANI**
(महाप्रबंधक/मुख्यालय/मध्य रेल|**GM/HQ/CR)**

क्षेत्रीय भाषा का महत्व

विकास कुमार बघेल
वरिष्ठ अनुवादक

क्षेत्रीय भाषा का उद्देश्य हिंदी व गैर-हिंदी भाषी राज्यों में भाषा के अंतर को समाप्त करना है। इसके अंतर्गत एक आधुनिक भारतीय भाषा का अध्ययन अधिमानतः हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी और अंग्रेजी के अलावा अन्य क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में से कोई एक भाषा को शामिल करना है।

देशहित के लिए प्रथम भाषा: हिंदी भाषा होगी जो कि सबसे ज्यादा बोली और समझी जाती है, द्वितीय भाषा: क्षेत्रीय भाषा गैर हिंदी भाषियों के लिए तथा तृतीय भाषा: के रूप में अंग्रेजी भाषा जोकि सरकारी कार्यालयों में हिंदी की सहायक भाषा के रूप में अपनाई जाएगी ।

यदि हमें इसे वास्तविक रूप से देखें तो इसको इस रूप में देखा जा सकता है, जैसे- गैर हिंदी भाषी राज्यों में भी उनकी मातृभाषा अर्थात क्षेत्रीय भाषा दूसरे स्थान पर हिंदी को महत्व दिया जाएगा क्यों कि हमें अंग्रेजी के महत्व को कम करते हुए हिंदी को आगे बढ़ाना है। तीसरे स्थान पर अंग्रेजी को रखा जाए ताकि किसी भी प्रकार से सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों में कामकाज प्रभावित न हो ।

सर्वविदित है कि भारत बहुभाषी देश है । विद्धमानों की मान्यता है कि विश्व में लगभग 8000 हजार से अधिक भाषाएं बोली और समझी जाती हैं, पूरे भारत में कितनी भाषाएं बोली जाती है इसका सही तरीके से अनुमान लगाना तो मुश्किल है क्योंकि हिंदुस्तान में बहुत सी भाषाएँ बोली और समझी जाती है। यहां समान भाषा में भी भिन्न क्षेत्र में उसके भिन्न-भिन्न रूप को आसानी से महसूस किया जा सकता है । इतनी अधिक भाषिक विविधताओं के कारण ही भारतीय लोक में 'कहावत' है कि "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी"; हालांकि भारतीय संविधान में सिर्फ 22 भाषा को मान्यता प्राप्त है। लेकिन 2011 के आंकड़ों के अनुसार ऐसे लोग जो 10,000 से ज्यादा एक भाषा को बोलते हैं ऐसी 121 भाषाएं भारत में बोली और समझी जाती हैं । भारत उन चंद देशों में है जहां चार भाषाएं बोली, लिखी और समझी जाती है अर्थात 'क्षेत्रीय भाषा', 'हिंदी भाषा', 'अंग्रेजी भाषा' एवं 'राजभाषा' यानि कार्यालयीन कामकाज की भाषा । इसमें हम एक और भाषा को शामिल कर सकते हैं जोकि इन सबसे ऊपर एवं सबसे ज्यादा महत्व रखती है वह "मातृभाषा" जिसको सबसे पहले बच्चा इस दुनिया में सीखता है जैसे रोटी को 'ओटी', पानी को 'पप्पा', और मां को 'मम्मा' तथा पिताजी को 'पापा' कहता है; यही सबसे पहले मातृभाषा के रूप में सीखता है कालांतर में उसमें भाषा का सुधार होता जाता है फिर वह अपनी क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, स्कूली भाषा अंग्रेजी और अंत में जब वह सरकारी मुलाजिम बनता है तब वह राजभाषा को अपनाता है ।

आजादी के पूर्व और इसके उपरांत राजनीतिक फलक पर भाषा को लेकर काफी माथा-पच्ची होती रही है । फिर भी इसके बावजूद संघ की भाषा, राष्ट्रभाषा, अखिल भारतीय स्तर पर शिक्षा की भाषा एवं क्षेत्रीय

भाषा के मुद्दे जोर पकड़े हुए थे । संविधान निर्माताओं के लिए यह चिंता का एक बड़ा विषय था । भाषा संप्रेषण का माध्यम भर नहीं है । यह क्षेत्र विशेष की संस्कृति अस्मिता का घोतक भी है ।

इन स्थितियों के मद्देनजर सर्वसम्मति से देश की जनता के लिए "त्रिभाषा फार्मूला" लागू करने की पहल की गई । इसके अंतर्गत विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर छात्रों को तीन भाषाओं की शिक्षा देने का प्रावधान किया गया जैसा कि उपरोलिखित है । इसमें हिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी, अंग्रेजी के साथ-साथ एक अन्य भारतीय भाषा, वहीं गैर हिंदी भाषी राज्यों में क्षेत्रीय भाषा के अलावा हिंदी और अंग्रेजी अनिवार्य की गई ।

स्कूलों में त्रिभाषीय फार्मूला को लागू करने में दूरदृष्टि के संकेत थे। इससे भविष्य की भारतीय पीढ़ी ऐसी हो जो भारतीय भाषा को देश/विदेश में छवि का प्रतिनिधित्व कर सके। भारतीय छवि का निर्माण इसके एक से अधिक राज्यों की संस्कृति, अस्मिता से मिलकर होता है। भाषा किसी राज्य विशेष की संस्कृति, समाजिक, साहित्य को जानने का महत्वपूर्ण साधन है । इस तरह त्रिभाषा फार्मूला में एकता की भावना निहित है।

परंतु हम सिर्फ द्विभाषी फार्मूला को अपनाने पर जोर देना चाहिए क्योंकि हम विदेशी भाषा (अंग्रेजी) को क्यों अपनाएं लेकिन इसको भी झुठलाया नहीं जा सकता है कि अंग्रेजी हमारे समाज में जबरदस्ती सौंपी जाने वाला खूबसूरत 'तोफा' है । आज हम अंग्रेजी को एक 'वैशाखी' के तौर पर देखते है; हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं हमारे दोनो पैर है; परंतु अंग्रेजी एक सहारा देने वाली 'वैशाखी' है ।

सभी राज्यों ने अपने पसंद की भाषा के साथ इसे अपनाने लगे। महाराष्ट्र राज्य भी इससे अछूता नहीं रहा इसने भी इसे बड़े शौक के साथ क्षेत्रीय(मराठी), हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी को अपने अंदर रच-बस लिया है।

मैं अपनी भाषा के साथ अन्य राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं को समझने एवं सीखने के लिए शुरू से लालायित रहा हूं । हमारा उद्देश्य भी होना चाहिए क्योंकि पूरे भारत की सभी प्रतिष्ठित भाषाएं हैं । इनका ज्ञान पूरे भारत की जनता के लिए अनिवार्य है ।

आधुनिक भारतीय भाषा को महत्व देना इनकी समृद्धि की दिशा में एक बेहतर प्रयास की पहल है । भाषा की समृद्धि का सीधा संबंध जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता, उसके साहित्य और उसकी व्यापकता से पता चलता है । लोगों के दैनंदिन व्यवहारों में प्रयोग की जरूरत के कारण अभिव्यक्ति के स्तर पर कोई भी भाषा स्वतः समृद्ध होती है । अपने क्षेत्र में इतर भाषिक क्षेत्र के लोगों के बीच भाषा के साथ-साथ साहित्य का भी फैलाव होता है । इतर भाषी लोगों के द्वारा उनकी स्थानीय भाषा में भाषा विशेष के साहित्य की अनुवाद की संभावना भी बढ़ जाती है । वर्तमान परिदृष्य में अनुवाद की अपर्याप्तता का एक बड़ा कारण इतर भाषाओं की जानकारी का अभाव रहा है । भाषाओं की जानकारी बेरोजगारी से जुझते भारतीय भाषा विद्यार्थियों के लिए अनुवाद के रूप में रोजगार का बड़ा माध्यम हो सकता है । आज भारतीय विश्वविद्यालयों में विदेशी एवं भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को एक विषय के रुप में शामिल किया गया है जिससे युवा पीढ़ी इससे लाभविन्त हो सके और शिक्षा के माध्यम से भाषा के क्षेत्र में अपने भविष्य को एक रोजगार के रूप में उसका लाभ ले सके ।

महाराष्ट्र राज्य में तो हिंदी बनाम मराठी एक ज्वलंतशील मुद्दा बना रहा है। सरकारें भी इस खेल को खेल कर जीत हासिल करती आई है । आज महाराष्ट्र राज्य में मुंबई जोकि सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व वाली आबादी में अन्य राज्यों की तुलना में हिंदी भाषिक लोग सबसे अधिक संख्या में अपना जीवन निर्वाह करते नजर आएंगे क्योंकि एक तो फिल्मी दुनिया का आकर्षण, दूसरा इसमें रोजगार की अपार संभावनाएं हमेशा बनी रहती है जो बेरोजगारों को लगातार अपनी ओर आकर्षित करती रहती है ।

महाराष्ट्र की क्षेत्रीय भाषा के रूप में हम मराठी को पहनते-ओढ़ते है । इसका इतिहास हिंदी से भी अधिक प्राचीन एवं सभ्य है । इसकी लिपि देवनागरी है जो कि हिंदी की लिपि की श्रेणी में उच्चतम महत्व रखती है । मराठी विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक है। मराठी भाषा का इतिहास प्राचीन है सबसे पहले 13 वीं शताब्दी में संत ज्ञानेश्वर ने अपने साहित्य में मराठी भाषा का उल्लेख किया था जोकि दस्तावेजों में दर्ज है । मराठी भाषा अपने आप एक विशिष्ट स्थान रखती है । यह मुख्य रूप से महाराष्ट्र और गोवा के अलावा महाराष्ट्र की सीमा से लगे पड़ोसी राज्यों के कुछ हिस्सों में बोली और समझी जाती है। मराठी भाषा दुनिया की 10 वीं सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा है। इसके अलावा मराठी भारत में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और पूरी दुनिया में लगभग 10 करोड़ से अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा के रूप में दर्ज है ।

महाराष्ट्र को मराठी की पहचान और उसके अस्तिव को बनाए रखने में छत्रपति शिवाजी महाराज का सबसे बड़ा योगदान माना जाता है । उन्होंने मराठी की गरिमा बनाए रखने के लिए अपने आप को तन, मन और धन से अपने देश के लिए न्योछावर कर दिया । इसके अलावा मराठी भाषा की गरिमा बनाए रखने के लिए महान कवि कुसुमाराज ने 'मराठी भाषा' को ज्ञान की भाषा बनाने और उसे उचित महत्व देने के लिए अथक प्रयास किया । हम इनको कतई नहीं भूल सकते । कुसुमाग्रज के अलावा, कई ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता लेखकों ने मराठी भाषा के विकास के लिए उत्कृष्ट कार्य करते रहे है जिनका यहां सम्मानपूर्वक सम्मान देना मराठी भाषा को गौरवाविंत करता है: चिंतामन त्र्यंबक खानोलकर, विनायक जनार्दन कृष्णाजी, केशव दामले, आत्माराम रावजी देशपांडे, त्र्यंबक बापूजी थोम्ब्रे, प्रह्लाद केशव अत्रे, राम गणेश गडकरी, विष्णु वामन शिरवाडकर, निवृति रामजी पाटिल, विष्णुशास्त्री चिपलूनकर, गोविंद विनायक करंदीकर आदि । ये सब मराठी भाषा को विश्वस्तरीय पहचान बनाने के लिए किर्ती स्तंभ के रूप में स्थापित है । मराठी हमारे लिए सिर्फ एक भाषा नहीं है, यह सोहार्दय, देशप्रेम, स्नेह और संस्कृति की भाषा है। इसके शब्दों की शक्ति अपार है।

मराठी भाषा को आज भी जीवित रखने में केवल छत्रपति शिवाजी महाराज का योगदान है। शिवराय के कारण महाराष्ट्र और मराठी भाषा बची है। मध्य युग में, कई विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण किया। छत्रपति शिवाजी महाराज ने इस मराठी भाषा और संस्कृति की रक्षा की थी।

सरकार ने भी इस ओर विशेष ध्यान दिया है उन्होंने आगरा शहर में केंद्रीय हिंदी संस्थान, वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्व विद्यालय की स्थापना की जिससे देश-विदेश के हजारों युवाओं में भाषा को

लेकर एक रोमांच जागा और उन्हें रोजगार की संभावनाएं दिखाई देने लगी । आज भाषा प्रेमी इस ओर अपना ध्यान आकर्षित कर अपनी मातृभाषा के अलावा क्षेत्रीय भाषा तथा विदेशी भाषा में रोजगार तलाश कर भविष्य को संवार रहे हैं ।

सरकारी कार्यालयों में त्रिभाषा फार्मूले को एक देशभक्त जज्बा एवं समन्वय के रूप में देखा जा रहा है । इसमें सबसे पहले कदम रेलवे ने उठाया उन्होंने एक राज्य को दूसरे राज्य से भाषा के रुप में एक पुल बांधने का काम किया । रेलवे आज व्यवसायीकरण की ओर बढ़ रही है वह जानती है कि उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम तक सफर करने वाले राज्यों के लोगों को किस प्रकार से जोड़ा जाए इसके लिए उन्होंने भाषा को एक हार या माला के धागे के रूप में तैयार किया और उन्होंने जनता को लुभाने के लिए अपने स्टॉल खोल दिए है जैसे- गाड़ियों पर त्रिभाषा फार्मूले का प्रयोग किया ताकि उत्तर भारत से दक्षिण की सैर को जाने वाला व्यक्ति को दक्षिण में जाकर वहां क्षेत्रीय भाषा की जानकारी न होने पर परेशानी का सामना न करना पड़े इसी प्रकार से दक्षिण का व्यक्ति उत्तर या किसी पूर्वी या पश्चिम राज्य में जाकर परेशान न हो सके । स्टेशनों पर उदघोषणा (एनाउंसमेंट) त्रिभाषा के रुप में शुरु कर दिया इसके अलावा स्टेशनों पर सभी होर्डिंग या डिसप्ले को त्रिभाषा फार्मूले का रूप दे दिया तथा टिकटों एवं चार्टों में भी हिंदी और क्षेत्रीय भाषा को महत्व दिया जाने लगा ।

भारत सरकार की केंद्रीय हिंदी समिति के निर्णयों के अनुपालन में गैर हिंदी भाषा राज्यों के सरकारी कार्यालयों में त्रिभाषा फार्मूले को जोर दिया जाने लगा उन्होंने नामपट्टो, सूचनापट्टों एवं सूचनाओं, मोहरों को क्षेत्रीय भाषा के अलावा हिंदी एवं अंग्रेजी में अपनाने और प्रचार-प्रसार पर जोर दिया गया । इस कार्य को सुचारु रुप से कार्यान्वित करने के लिए हिंदी अनुवादकों को यह जिम्मेदारी सौंपी गई । इसका नतीजा सकारात्मक रहा और लोगों के अंदर त्रिभाषा फार्मूलें को लागू करने एवं उसके कार्यान्वयन से उन्हें देश को एकता की कड़ी जोड़ने का एहसास होने लगा और स्वतः ही वह इसको अपनी दैनंदिन कार्यालयीन कार्यों में शामिल करने लगे । इसका सबसे बड़ा कारण एक राज्य से दूसरे राज्यों में नौकरी करने वालों की समस्या को समझा और त्रिभाषा फार्मूले के महत्व को सफल बनाने का प्रयास किया जाने लगा ।

आज सभी राज्यों में प्रतियोगिताओं की परीक्षाओं में त्रिभाषा में प्रश्नपत्र तैयार किये जा रहे है और युवावर्ग परीक्षाओं में सफल होकर उन्हें रोजगार आसानी से उपलब्ध हो रहे है और त्रिभाषा के फलीभूत वह एक राज्य से दूसरे राज्यों में बड़ी आसानी से रोजगार के लिए आ-जा रहें हैं और अपनी आजीविका का निर्वहन कर रहे हैं ।

ऐसा माना जाता है कि यदि हम कई भाषाओं को पढ़-लिख लेते है तो वह हमारे व्यक्तिव की सजृनात्मकता को कम करती है । यह धारणा बेबुनियाद है । भारत में ऐसे कई साहित्यकार एवं लेखक है जिन्हें अपनी भाषा के साथ कई अन्य भाषाओं की भी जानकारी होने के कारण उन्होंने साहित्य में विशेषता हासिल है और उन्होंने भाषा को एक नया मुकाम दिलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

आज बच्चों में कई भाषाओं को सीखने एवं पढ़ने लिखने की इच्छा उनके उज्जवल भविष्य के लिए नए द्वार खोल रही है वह जानती है कि यदि वह अपनी मातृभाषा के अलावा अन्य क्षेत्रीय एवं विदेशी भाषाएं सीख

लेते है तो उन्हें भारत एवं विदेश के किसी भी राज्य में उन्हें रोजगार एवं रहने के लिए पर्याप्त सुविधा का अवसर प्रदान करेगी । आज मीडिया एवं सोशल मीडिया में इस तरह के कई एप्प उपलब्ध हैं जो बच्चों को विदेशी एवं अन्य राज्यों की भाषाओं की जानकारी तुरंत उपलब्ध करा देते है और उसके माध्यम से विदेशी साहित्य, तकनीकी, सांस्कृतिक एवं उनके रहन-सहन को अच्छी तरह से परिचित भी करा देती है । इससे बच्चों में अधिक से अधिक शब्दों में परिचित होने का अवसर मिलता है और बच्चों के ज्ञान फलक विस्तृत और गहन होता जाता है तथा उनके अनुभव में तीव्रता की वृद्धि होती है ।

आज देश का बड़ा हिस्सा अपने ही देश के विभिन्न भाषाओं के समृद्ध साहित्य से वंचित है । संवेदना के स्तर पर लोग भाषिक परिधि में बंटे हुए हैं । त्रिभाषा सूत्र इस परिधि को तोड़ने का मजबूत औजार हो सकती है।

इसलिए हमें त्रिभाषा फार्मूला देश के सभी विद्यालयों एवं कार्यालयों में सख्ती से लागू करने पर जोर देना चाहिए ताकि हमारे देश को एक बहुभाषिक देश का दर्जा मिल सके ।

भारतीय रेल विद्युत इंजीनियरिंग संस्थान
(इरीन), एकलहरा रोड़, नाशिक रोड-422101

मध्य रेल पर राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक प्रयोग-प्रसार करने के लिए महाप्रबंधक तथा प्रधान मुख्य सिगनल तथा दूरसंचार इंजीनियर एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी को प्रतिष्ठित संस्था 'आशीर्वाद' द्वारा 'उत्कृष्ट केंद्रीय कार्यालय' पुरस्कार से सम्मानित किया गया । पुरस्कार महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल श्री भगत सिंह कोश्यारी के कर-कमलों से प्रदान किए गए ।

<u>शगुन की मेहंदी</u>

सौ. ममता राजेश टेंपे

तकनीशियन - I

घर में चारों तरफ खुशियों का माहौल था | पूरा घर मेहमानों से भरा था | काव्या की शादी की तैयारियां चल रही थी और आज उसकी मेहंदी की रस्म होने वाली थी |

आंगन में मंडप डाला गया था | पूरे घर और मंडप को मन-मोहक फूलों से सजाया गया था| मेहंदी की रस्म के लियें काव्या को मंडप में लाया गया| फूलों से सजी एक मेज पर काव्या को बिठाया गया और मेहंदी की रस्म शुरु हुई |

सदियों से चलती आ रही परंपरा के मुताबिक दुल्हन के शगुन की पहली मेहंदी दुल्हन की माँ लगाती है | काव्या की नजरें बार बार अपनी माँ को तलाश कर रही थी | लेकिन काव्या की माँ सुगंधा मंडप में कही भी नजर नही आ रही थी |

मेहंदी का मुहुर्त शुरू होते ही काव्या की चाची सामने आयीं और काव्या को मेहंदी लगाने लगी । काव्या ने तुरंत अपना हाथ पीछे कर लिया और मेहंदी लगाने से मना किया । सभी लोग अचंभित होकर देखने लगे तब काव्या ने कहा, ''चाचीजी, शगुन की पहली मेहंदी लगाने का अधिकार तो माँ का होता है ना ? तो फिर माँ कहा है ? उनकी जगह आप क्यों मुझे मेहंदी लगा रही हो? तभी एक बुजुर्ग महिला ने कहा, ''हां बेटा, तुम्हारी बात सही है की शगुन की मेहंदी माँ लगती है | पर तुम्हारी माँ तुम्हे मेहंदी नही लगा सकती क्योंकि यह काम सुहागन महिला का है । और तुम्हारी माँ विधवा है । विधवा महिला का किसी भी शुभ कार्य में सम्मिलित होना अपशकुन माना जाता है । इसिलिये तुम्हें अब अपनी चाची के हाथ से ही मेहंदी लगानी होगी ।

काव्या को यह बात गलत लगी । वह बोली, '' पापा के देहांत के बाद से माँ ने ही सारी जिम्मेदारियां निभायी है । मुझे पढ़ाया, लिखाया, काबिल बनाया । मेरी शादी की सबसे ज्यादा खुशी भी तो माँ को ही हुई थी । जिन्होंने नौ महिने मुझे अपनी कोख मे पाला, मुझे जन्म दिया, भला उसी माँ की मौजूदगी से मेरे शादी मे अपशकुन कैसे हो सकता है? मैं उन रस्मों को नहीं मानती जिसमें मेरी माँ को अपशकुनी माना जाता हो । काव्या जिद पर अड़ जाती है कि मेहंदी लगायेगी तो सिर्फ माँ के हाथों से ही, वरना नहीं लगायेगी।

यह सुनकर सारी महिलायें दंग रह जाती हैं। सब में खलबली मच जाती है ।

सुगंधाजी को यह बात पता चलते ही वह चेहरे पर घूंघट ओढे काव्या के पास आती है और उसे मनाने की कोशिश करती है । वह कहती है, ''जिद मत करो बेटी । मेरे हाथों से मेहंदी लगवाओगी तो तुम्हारा सुहाग भी मेरी तरह उजड़ जायेगा और मैं यह बिल्कुल नहीं चाहती ।''

तभी काव्या बोल पड़ती है, " माँ, आप यह रस्म नहीं करना चाहती क्योंकि आप भी इस पाखंड को मानती हो। जरा याद करके बताइये माँ कि जब आपकी मेहंदी की रस्म हुई थी, तब आपने भी तो सुहागन महिला के हाथों से ही मेहंदी लगवायी थी ना ? फिर भी तो पापा का देहांत हो गया ना ? फिर इसका जिम्मेदार कौन था ? जन्म-मरण यह तो नैसर्गिक प्रक्रियायें हैं ना माँ।

काव्या की बातें सुनकर पूरे मंडप में सन्नाटा छा गया। किसी के पास भी काव्या के सवालों का जवाब नहीं था। तभी भीड़ में से एक महिला सामने आती है। काव्या को गले लगा लेती है और कहती है, ''मैं धन्य हूं ऐसी अच्छी और सुलझी हुई सोच की बहू पाकर। मेरी बहू ने आज मेरी आंखे खोल दी।''

सभी की नजरें झुक जाती हैं और सुगंधाजी के आंखो मे आंसू आ जाते हैं। काव्या की सासू-माँ सुगंधाजी से कहती है, "समधन जी, हर लड़की का सपना होता है उसकी शादी में उसके माँ और पिता दोनों साथ हों। काव्या के पिता तो नहीं रहे लेकिन अगर आप सामने आकर काव्या को मेहंदी लगा दें तो काव्या को बेहद खुशी होगी और समाज मे एक मिसाल भी कायम हो जायेगी।

सुगंधाजी अपने आंसू पोंछती है और काव्या को मेहंदी लगाने बैठ जाती हैं। आज सुगंधा जी का बरसों पुराना सपना पूरा हो रहा था, अपनी बेटी को शगुन की मेहंदी लगाने का।

विद्युत लोको शेड अजनी,

मध्य रेल, नागपुर मंडल

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा महाप्रबंधक कार्यालय, मध्य रेल का निरीक्षण

मेरी परी

पुण्य किए होंगे मैंने तुमको जो पाया

तेरे आने से ही मेरा आँगन है महकाया

खुशी का न कोई ठिकाना था

जब पहली बार तुमको देखा था तब पहली बार

परी कह कर मैंने तुमको बुलाया था

नटखट थी, चंचल थी, मेरी छोटी सी परी

न जाने कब बड़ी हो गई ।

उसका ध्यान रखते-रखते

कब वो मेरा ध्यान रखने लगी

मेरे समझाते-समझाते कब वो मुझे समझाने लगी

न जाने मेरी छोटी सी

परी कब बड़ी हो गई ।

अपनी मुस्कराहट से घर को महकाती है

अपनी बातों से सबका मन बहलाती है

न जाने मेरी छोटी सी परी

कब बड़ी हो गई ।

कामयाबी कदम चूमे तुम्हारे,

ये दुआ है मेरी

मेरी इज्जत, मेरी शौहरत मेरा अभिमान है मेरी परी

न जाने मेरी छोटी सी परी

कब बड़ी हो गई ।

श्रीमती राशी गुप्ता

पत्नि अमित गुप्ता

वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर

टी.आर.आर/वि.लो.शे/अजनी

मेरी माँ

किस्मत वाली हूँ मैं भी, जो पाया सबसे अनमोल खजाना ।

तुम कहते होगे आई, अम्मा या बा, पर मैंने माँ के नाम से है जाना ।।

मेरी माँ, मेरी सबसे निराली माँ, तुम कैसे कभी नही थकती ।

लुटाती रहती हो अपना प्यार दिन-रात और कभी नही रूकती ।।

मेरी हर उलझन, हर परेशानी, हर मुश्किल का जवाब हो तुम ।

तुम्हारी गोद ही मेरी जन्नत है, मेरी दुनिया मेरा भगवान हो तुम ।।

कैसे कर लेती हो इतना सब कुछ, पर कभी नही जताती ।

मैं भी तो तुम्हारा अंश हूं माँ, पर क्यों तुम जैसी नही बन पाती ।।

मुझे भी बतला दो ना माँ, कैसे पाया तुमने बडप्पन इतना सारा ।

सभी अपने हैं, कोई पराया नही, पूरा संसार जैसे परिवार हो तुम्हारा ।।

हर जनम तुम्हारे आंचल की छांव मिले, तुम्हारी ममता तुम्हारा प्यार मिले ।

तुम यूं ही मुस्कुराती, खिलखिलाती रहो, तुम्हारे आशीष से ही मेरा संसार चले ।।

प्रियंका संदीप तिवारी
एस.एस.ई./टीआरएस/विलोशे/अजनी
नागपुर मंडल

आयी शरद ऋतु आई, ठण्डक की आहट लाई

प्रकृति को अपनी ठंडी चादर में लपेटे,
बदली से निकलकर, सुबह-सुबह आंख खोलते
सूरज की लाली से, ओस की बूँदों को, पत्तों पर
सुन्दर चमकीली ठिठुरते, लाल - हरी मोतियों की
स्वर्णिम छटा बिखेरती, शरद ऋतु आयी।

धान के खेतों में सुनहरी झूमती बालियों की लहरें,
पुकारती किसानों को, मैं सोने के गहनों से
सजी दुल्हन हूँ, विरह की बेला बीत गयी,
आओ साजन! घर ले चल कि शरद ऋतु आयी।

लाल-पीले फूल अपने बालपन को छोड़कर,
किशोर होने का झूम-झूमकर प्रमाण दे रहा,
मैं भी इस ऋतु में, प्रेयसी संग प्रेम का गीत गाऊँ
धरा पर अपनी रंगोली बनाऊँ कि शरद ऋतु आयी।
मंज़र के सुगंध से मदमस्त ऐरावत- सा झूम रहा,
प्रियतम से मिलन की आश लिये, गा रहा प्रेम गान
आज आम्र पुलकित है, फिर नव यौवन पाकर
भँवर के प्रणय गूंज से, उसका अंतर्तम हर्षित है,
प्रेयसी संग नाच रहा कि शरद ऋतु आयी।

पावस की फुहार से, कलकल करती हुई
नदियों की धार भी, मिलने को आतुर है।
बाहें फैलाये, सागर! भी देख रहा, प्रियतम की राह
पर्वत के झरनों का शीतल संसर्ग हुआ,
कि शरद ऋतु आयी, शरद ऋतु आयी।

संतोष कुमार शर्मा
कार्य अध्ययन निरीक्षक
महाप्रबंधक कार्यालय
मध्य रेल , छ. शि. म. ट.

छोड़ आए हम वो गलियाँ........

गोद में जिसकी बिताया था बचपन,

भूल ना पाएंगे वो माँ-सा मन।

वो गरमी की तपती धूल,

वो बरसात का बहता पानी ।।

कहते रहते थे हम कभी,

बिताएंगे इसमें ये मदभरी जवानी...

छोड़ आए हम वो गलियाँ............ (1)

हमेशा याद रहेगी वो जगह,

जहां बनाते थे सपनों के महल।

कोई होता राजा तो कोई रानी,

तो कोई चलाता खेतों में हल ।।

जहां दौड़ते रहते थे,

सजे हुए बैल, लेके बैलगाड़ियाँ........

छोड़ आए हम वो गलियाँ......... (2)

जहां खड़े होकर देखा करते थे,

होते हुए सूर्योदय और अंत।

बिना जूते के बिताया जहां,

गर्मी, वर्षा और बसंत।।

कभी नजर आते जहां इन्द्रधनुष,

तो कभी पानी बरसाती बदलियाँ.......

छोड़ आए हम वो गलियाँ......... (3)

स्वर्ग दिखता था जहां धरा पर,

जब आता महिना सावन का।

मन पुलकित हो उठता था,

जब आता समय झूला बंधन का।।

तभी अचानक बारिश आती,

तर कर जाती वो झूला, वो डालियाँ........

छोड़ आए हम वो गलियाँ......... (4)

दिलों के तार से तार जुड़ जाते,

जब आती रंग बिरंगी होली।

गलियां सूनी पड़ जाती थीं,

जब दिखती मन मौजों की टोली।।

रंगों में सराबोर बच्चे दिखते,

नई बहुएँ दिखती पहने रंग बिरंगी साड़ियाँ.........

छोड़ आए हम वो गलियाँ......... (5)

खुशियों की लहर दिखती गलियों में,

तैयारी जब होती दिवाली आगमन की।

गोबर से लीपा जाता गलियों को,

घर-घर पूजा होती गोवर्धन की।।

तब बैलों को सजाकर गलियों में,

छोड़ते पटाखों की लड़ियाँ.....

छोड़ आए हम वो गलियाँ......... (6)

आनंद कुमार केवट

वरि. कार्य अध्ययन निरीक्षक

महाप्रबंधक कार्यालय

मध्य रेल, मुंबई

शौर्य तथा आध्यात्म का कीर्तिशिखर : सज्जनगढ़

विपिन पवार

"...महाराज रथ से नीचे उतरे, चरण पादुकाएं उतारी और झटपट दौड़ते हुए गुरुजी के निकट जा पहुंचे और उनके चरणों पर अपना मस्तक रख दिया। "राममय बनो।" महाराज के सिर पर हथेली रखकर गुरुजी ने मानी आशीर्वाद का छत्र ही रख दिया।

महाराज थे अदम्य शौर्य तथा वीरता के प्रतीक छत्रपति श्री शिवाजी महाराज तथा गुरु थे विश्व कल्याण के लिए समर्पित 'दासबोध' के रचयिता संत श्री स्वामी समर्थ रामदास जी। स्वामी समर्थ, छत्रपति श्री शिवाजी महाराज के आध्यात्मिक गुरु थे। प्रसंग तब का है जब छत्रपति श्री शिवाजी महाराज स्वामी जी से मिलने के लिए सज्जनगढ़ पर पधारते हैं। यह वही सज्जनगढ़ है, जहां सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात छत्रपति शिवाजी महाराज ने लगभग डेढ़ माह का समय स्वामी जी के सानिध्य में व्यतीत किया था।

मध्य रेल के पुणे-मिरज सेक्शन पर पुणे से 145 किलोमीटर की दूरी पर सातारा स्टेशन स्थित है और स्टेशन से 6 किलोमीटर की दूरी पर ऐतिहासिक सातारा शहर स्थित है। ऑटोरिक्शा या बस से सातारा शहर पहुंचा जा सकता है सातारा स्टेशन पर अधिकारी विश्राम गृह है लेकिन आसपास भोजन के लिए किसी अच्छे होटल आदि की सुविधाएं न होने के कारण यहां रहना खासा असुविधाजनक है। सातारा शहर में अनेक अच्छे होटल एवं लॉज हैं, जहां रहा जा सकता है। सातारा शहर की नैऋत्य दिशा में 10 किलोमीटर की दूरी पर उरमोड़ी या उर्वशी नदी की हरित घाटी में परली गांव के निकट शंखाकृति पर्वत पर समुद्र सतह से 900 मीटर तथा भूसतह से 300 मीटर की ऊंचाई पर सज्जनगढ़ स्थित है। छत्रपति श्री शिवाजी महाराज तथा अनेक संतों महात्माओं के पावन निवास का साक्षी होने के कारण महाराष्ट्र में इस स्थान की धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व प्राप्त है। बताया जाता है कि 10वीं-11वीं शताब्दी में शिलाहारों ने इसका निर्माण किया था। इस किले पर आश्वलायन ऋषि का निवास होने के कारण इसे आश्वलायनगढ़ भी कहा जाता है। किले की तलहटी पर घने जंगलों में रीछों की बहुतायत के कारण जनता इसे अस्वलगढ़ के नाम से भी जानती है क्योंकि मराठी में रीछ को अस्वल कहते हैं। यह स्थान परली का किला तथा परलीगढ़ के नाम से भी विख्यात है। बहमनी राज्य के वारिस बीजापुर की आदिलशाही के अधिकार में आ जाने के पश्चात इसे नवरसतारा या नौरसतारा नाम दिया गया। सन 1673 में छत्रपति श्री शिवाजी महाराज ने इस किले को पुनः अपने अधिकार में ले लिया। 1668 मीटर की परिधि वाले इस किले तक पहुंचने के लिए लगभग 780 सीढ़ियां हैं, जिनका निर्माण श्री समर्थ सेवा मंडल ने किया है, जो इस संपूर्ण परिसर का प्रबंध सुव्यवस्थित ढंग से करता है। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में स्वामी जी ने छत्रपति श्री शिवाजी महाराज से निवेदन किया था कि अब उन्हें किसी किले पर विश्राम करने दिया जाए। आज्ञापालक महाराज ने अपने गुरु जी की आज्ञा शिरोधार्य कर उन्हें अपने कई किले दिखाएं और स्वामी जी को सज्जनगढ़ पहली नजर में ही भा गया। सन 1673 में स्वामी जी का इस किले पर पदार्पण हुआ और वे अपने परलोकगमन अर्थात 22 जनवरी 1682 तक इसी किले पर रहे। इस बीच उन्होंने यहां अनेक मंदिरों का निर्माण कराया।

सज्जनगढ़ के रास्ते पर 590 सीढ़ियां समाप्त होने के बाद गाय मारुति मंदिर आता है। कहते हैं कि इस स्थान से पहाड़ी से गिरकर सैकड़ों गाएं मर गई थी, जिनकी स्मृति में इस मंदिर का निर्माण कराया गया था। निकट ही स्वामी जी के प्रिय शिष्य कल्याण स्वामी का मंदिर बना हुआ है। बाद में आता है किले का मजबूत द्वार, जिसे श्री छत्रपति शिवाजी महाराज द्वार कहा जाता है। कुछ और आगे बढ़ने पर समर्थ प्रवेश द्वार आता है। पेशवा युग की प्रथा के अनुसार किले के दरवाजे प्रतिदिन रात 10:00 बजे बंद हो जाते हैं तथा सूर्योदय पर ही खुलते हैं। यहां निवास एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था है, जिसके लिए पहले श्री समर्थ सेवा मंदिर से संपर्क 1. करना पड़ता है लेकिन कठोर अनुशासन एवं समय पालन का विशेष ध्यान रखने की शर्त होती है। प्रथम द्वार पर फारसी में 6 पंक्तियों का एक शिलालेख लगा हुआ है, जिसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार है-

"समृद्धि तेरे दरवाजे से सबको दिखाई दे रही है। कार्य की पूर्ति (अर्थात किले का निर्माण पूर्ण होने के कारण) हिम्मत सब पुष्पों को प्रफुल्लित कर रही है। तू विवंचना दूर होने का स्थान है लेकिन विवंचना से मुक्त है, तुझसे सब विवंचनाएं दूर होती है। परली किले की इमारत के दरवाजे की नींव 3 जमादिलाखर तारीख को पूरी हुई, आदिलशाही रेहान ने यह काम पूरा किया।"

किले के रास्ते में एकबोटे कमान तथा लोकमान्य कमान बनी हुई है लेकिन इसके निर्माण का प्रयोजन ज्ञात नहीं हो पाया। इसी परिसर में मस्जिद के समान दिखाई देने वाली एक इमारत दृष्टिगोचर होती है। इतिहास में इस तथ्य का उल्लेख है कि औरंगजेब ने इस किले पर विजय हासिल करने के उपलक्ष्य में 13 जून 1700 को यहां नमाज अदा की थी, यह वही स्थान हो सकता है।

यहां पर आंग्लाई देवी का मंदिर बना हुआ है। कहते हैं कि स्वामी समर्थ जी को अंगापुर गांव के तालाब में दो मूर्तियां मिली थी, जिनमें से एक मूर्ति की स्थापना इस मंदिर में की गई है, यह चतुर्भुजा महिषासुरमर्दिनि की मूर्ति है। इसी मंदिर पास स्वामी जी के दो मुस्लिम भक्तों की कबरें हैं, जो उस पुरातन काल की हिंदू -मुस्लिम एकता का प्रतीक है। श्रीधर कुटी वह स्थान है, जिसमें स्वामी जी रहते थे। स्वामी जी की समाधि में उनकी रजत पादुकाएँ रखी हुई है। समाधि के दर्शन का समय केवल सुबह 8:00 से 10:00 बजे तक ही है। शयनकक्ष में स्वामी जी के नित्य उपयोग की व्यक्तिगत चीजें आम जनता के दर्शनों के लिए रखी गई हैं, जिनमें श्री शिवाजी महाराज द्वारा स्वामी जी को प्रदत्त आकर्षक गुप्ती विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती है। धातु से निर्मित दो विशालकार कलशों को देखकर उस युग के भीमाकार बलशाली मानव की सहज ही कल्पना की जा सकती है। गाइड ने बताया कि उस युग में किले का जलस्त्रोत सोनाले तालाब नहीं था, तब स्वामी जी नीचे परली गांव से प्रतिदिन प्रातः पानी से भरे हुए विशालकाय कलश लेकर ऊपर किले तक आते थे।

दो बाल विधवाओं ने स्वामी जी की शरण में आकर इस किले पर अपना जीवन व्यतीत किया था उन्हीं की स्मृति में श्री वेणाबाई वृंदावन तथा श्री अक्काबाई वृंदावन बना हुआ है। श्री अक्काबाई वह महान संत थी, जिन्होंने स्वामी जी के निधन के पश्चात मठ का संपूर्ण कामकाज संभाल लिया था। स्वामी जी के मठ का संपूर्ण प्रबंध छत्रपति श्री शिवाजी महाराज के आदेशानुसार सरकारी खजाने से किया जाता था। उस युग में ऐसे अनेक मंदिर, मठ, पुजारी एवं विद्वान थे, जिनके लिए छत्रपति श्री शिवाजी महाराज ने राजकीय खजाने से एक निश्चित रकम तय कर दी थी, जिसके बारे में महाकवि भूषण ने लिखा था-

"जीवन में नर लोग बड़ो,
कवि भूषण भाषत पैज अड़ो है।
नर लोगन में राज बड़ो,
सब राजन में सिवराज बड़ी है।"

इस स्थान के बारे में एक अलौकिक तथा रहस्यात्मक दंतकथा प्रचलित है। श्री स्वामी समर्थ जी ने अपनी अंतर्दृष्टि से जान लिया था कि गांव में उनकी मां की मृत्यु होने वाली है। उन्होंने अपने आप को मंदिर में बंद कर लिया तथा शिष्यों को आदेश दिया कि उनके एकांतवास में कतई व्यवधान उपस्थित न किया जाए एवं निर्दिष्ट समय पर मंदिर का द्वार खोलने पर शिष्यों ने देखा कि स्वामी जी का सिर घुटा हुआ है। पूछने पर ज्ञात हुआ कि स्वामी जी महाराष्ट्र के जांब नामक गांव में अपनी माताजी का अंतिम संस्कार कर आए हैं।

छत्रपति श्री शिवाजी महाराज के पश्चात स्वामी जी, छत्रपति श्री संभाजी महाराज को भी राज्याचार, लोकोपचार तथा नीति विषयक उपदेश दिया करते थे। राजमाता श्रीमती जीजाबाई जी (छत्रपति श्री शिवाजी महाराज की माता जी) तो स्वामी जी की अनन्य भक्त थी। वे सदैव दासबोध का पारायण करती रहती थी। उस युग में श्री स्वामी समर्थ रामदास जी द्वारा छत्रपति श्री शिवाजी महाराज को दिया गया। उपदेश आज भी कितना सार्थक है-

“खेत की नाली में बाधा हो,

तो पानी रुक जाता है।

जनता के मन की बाधा हो,

राजा जाने, दूर हटाएं।

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

मध्य रेल, मुंबई छशिमट

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

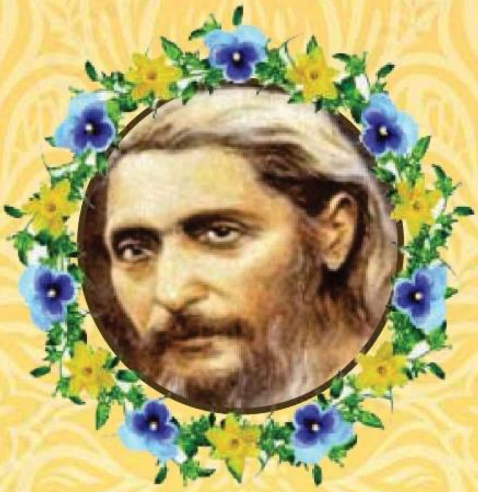

सादर नमन

जन्म : 21.02.1899

मृत्यु : 15.10.1961

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने कई कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किन्तु उनकी ख्याति विशेषरुप से कविता के कारण ही है। निराला के जीवन की सबसे विशेष बात यह है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने सिद्धांत त्यागकर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया, संघर्ष का साहस नहीं गंवाया। जीवन का उत्तरार्द्ध इलाहाबाद में बीता। वहीं दारागंज मुहल्ले में स्थित रायसाहब की विशाल कोठी के ठीक पीछे बने एक कमरे में उन्होंने अपनी इहलीला समाप्त की।